समग्र विश्व के सभी सनातनधर्मी जनों से मेरा निवेदन :-

अभी कलियुग का अंत हो चुका है। श्रीमद् भागवत महापुराण, श्रीमद् महाभारत, श्रीमद् रामायण, विष्णु पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण, वायु पुराण, गर्ग संहिता, मनुस्मृति, सूर्य सिद्धांत, निर्णय सिंधु और जगन्नाथ संस्कृति के अनुसार सनातन धर्म का आखिरी धर्मग्रंथ, 'भविष्य मालिका पुराण' एवं उसके रचयिता भगवान महाविष्णु के नित्य पंचसखा (महापुरुष अच्युतानंद दास, महापुरुष जगन्नाथ दास, महापुरुष जशोबंत दास, महापुरुष शिशु अनंत दास और महापुरुष बलराम दास) के अनुसार अभी (2024 में) कलियुग का 5130वां साल चल रहा है और कलियुग की समाप्ति हो चुकी है।

ऐसे में अभी और आगे सारे विश्व में जल प्रलय (सुनामी, बाढ़, अनियमित वर्षा, जगह-जगह बादल फटना, आदि), वायु प्रलय (चक्रवात, आंधी-तूफान, धूल के बवंडर, आदि), अग्नि प्रलय (विश्वयुद्ध, जंगलों की आग, ज्वालामुखी विस्फोट, कल कारखानों में अग्निकांड, देव मंदिरों एवं आवासों-घरों में आग लगना, आदि), अंतरिक्ष प्रलय (उल्कापात, वायुमंडल तथा ग्रह-नक्षत्रों में असाधारण परिवर्तन, कई सूर्यों का उदय, सौर तूफान, आदि), भूप्रलय (भूकंप, भूस्खलन, महादेशों की भौगोलिक स्थितियों में परिवर्तन, आदि) जैसे पंचभूत प्रलय बड़ी आपदाएं लायेंगे जिनसे संपूर्ण विश्व के सभी जीव ग्रस्त हो उठेंगे। साथ ही 64 प्रकार की भीषण महामारियां (कैंसर, हार्ट अटैक, वायु रोग), चर्मरोग, रक्त वमन, ब्रेन स्ट्रोक (मस्तिष्क आघात), उदर रोग, आदि अनेक तरह की बीमारियां मानव समाज में किसी को नहीं छोड़ेंगी। इनके अतिरिक्त सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं (जातीय दंगे, नस्लीय दंगे, गुट निरपेक्ष दंगे, आदि) भी होंगी ।

ऐसे में मानव सभ्यता के उद्धार का एकमात्र रास्ता है त्रिकाल संध्या की अमृत धारा। किसी भी जाति, धर्म, संस्कृति का मानव इस धारा का अनुसरण कर अपना उद्धार पा सकता है। समय आ रहा है जब सभी धर्मों का मिलन होकर एक "सनातन धर्म" ही रहेगा। सनातन धर्म ब्रह्म के अष्टादश पुराण का मूलतत्व (मूल बीज) है। जो भी इस तत्व का अनुसरण करेंगे वे भगवान "कल्कि राम" की कृपा प्राप्त कर सारी तकलीफों और आपदाओं से सुरक्षित रहेंगे ।

अभी कलियुग-अंत के बारे में मानव समाज को जानकारी नहीं है। इस कारण मानव सभ्यता के कल्याण के लिए मैं यह पवित्र तत्व समर्पित कर रहा हूं।

समय बहुत कम बचा है। आनेवाले समय का निवेश करते हुए त्रिकाल संध्या का पालन कर सभी कल्याण का मार्ग प्राप्त करें ।

- जगन्नाथ संस्कृति के प्रखर विद्वान
परमपूज्य पंडित श्री काशीनाथ मिश्र

▸ गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

▸ भगवान महाविष्णु जी के धर्म संस्थापना के 16 नाम

भगवान महाविष्णु जी के धर्म संस्थापना के 16 नाम चतुर्युग के सबसे महत्वपूर्ण 16 अवतारों के नाम हैं ।

यह मंत्र मानव जीवन में जन्म से मृत्यु तक के जीव चक्र बंधन से, सामाजिक, भौतिक और पारिवारिक आपदाओं से रक्षा पाने का साधन है ।

श्री विष्णु षोडश नाम

औषधे चिन्तयेत् विष्णुं ।
भोजने च जनार्दनम् ।।

औषधि लेते समय भगवान श्रीविष्णु (जो सृष्टि का भरण, पोषण और पालन करने वाले हैं) का स्मरण करें, भोजन करते समय जनार्दन (लोगों के कष्ट हरने वाले भगवान श्रीकृष्ण) का स्मरण करें।

शयने पद्मनाभं च ।
विवाहे च प्रजापतिम् ।।

सोते समय भगवान पद्मनाभ (जिनकी नाभि से कमल-नाल और कमल निकलता है) का स्मरण करें । विवाह के समय भगवान प्रजापति (सृष्टि की सर्जना करने वाले) का स्मरण करें ।

युद्धे चक्रधरं देवं ।
प्रवासे च त्रिविक्रमम् ।।

युद्ध के समय चक्रधर भगवान (चक्रधारी भगवान श्रीविष्णु/श्रीकृष्ण) का स्मरण करें। प्रवास (यात्रा) के समय पर त्रिविक्रम (भगवान दत्तात्रेय) का स्मरण करें ।

नारायणं तनुत्यागे ।
श्रीधरं प्रियसङ्गमे ।।

मृत्यु के समय भगवान नारायण का स्मरण करें । परिवार में शांति और पति-पत्नी के बीच सुखद संबंध के लिए भगवान श्रीधर (देवी लक्ष्मी के पति) का स्मरण करें ।

दु:स्वप्ने स्मर गोविन्दं ।
सङ्कटे मधुसूदनम् ।।

बुरे स्वप्न आते हों तो गोविंद (गोवर्धन को धारण करने वाले भगवान श्री कृष्ण) का स्मरण करें।
संकट के समय भगवान मधुसूदन (मधु नामक दैत्य को मारने वाले, भगवान श्रीकृष्ण) का स्मरण करें ।

कानने नारसिंहं च ।
पावके जलशायिनम् ।।

जंगल में संकट के समय भगवान नृसिंह का स्मरण करें।
अग्नि संकट के समय भगवान के जलशायी अवतार का स्मरण करें ।

जलमध्ये वराहं च ।
गमने वामनं चैव ।।

पानी में डूबने का भय हो तो भगवान वराह का स्मरण करें।
यात्रा के समय भगवान वामन का स्मरण करें ।

पर्वते रघुनन्दनम् ।
सर्व कार्येषु माधवम् ।।

पर्वत पर संकट के समय रघुनंदन भगवान श्री राम का स्मरण करें ।
स्वर्ग, मृत्य, पाताल और कोटि ब्रह्मांड में किसी भी आपदा के समय भगवान माधव के नाम का स्मरण करें ।

षोडशैतानि नामानि ।
प्रातरूत्थाय यः पठेत् ।।

जो हर दिन प्रातः (त्रिसंध्या) के समय भगवान विष्णु के इन सोलह पवित्र नामों का पाठ करता है।

सर्वपापविनिर्मुक्तो
विष्णुलोके महीयते ।

वह अपने सभी पापों से मुक्त हो जाता है और जब वह शरीर का त्याग करता है
तो वैकुंठ लोक (गोलोक धाम) को प्राप्त करता है।

दशावतार स्तुति

भगवान महाविष्णु जी चारों युगों में महत्वपूर्ण 24 अवतार धारण कर धरती माता का उद्धार किया करते हैं। इनमें धर्म संस्थापना के 10 मुख्य अवतार हैं। जो मनुष्य इस दश अवतार स्तोत्र का नित्य त्रिसंध्या के माध्यम से पाठ करते हैं, उन सभी का सांसारिक, भौतिक, पारिवारिक आपदा से उद्धार हो जाता है। वे मानव जीवन के सबसे बड़े दुर्लभ परम पद मोक्ष को प्राप्त करते हैं।

दशावतार स्तोत्र
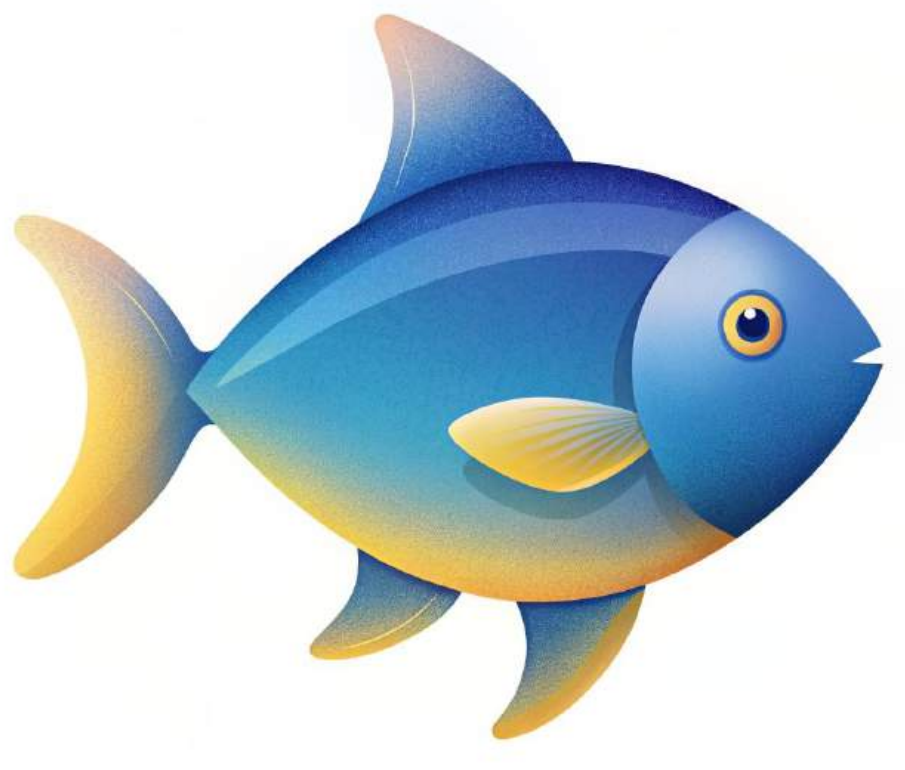
प्रलय पयोधि-जले धृतवान् असि वेदम् ।
विहित वहित्र-चरित्रमखेदम् ।
केशव धृत-मीन-शरीर, जय जगदीश हरे ।।
(मत्स्य अवतार)

क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे ।
धरणि- धरण-किण चक्र-गरिष्ठे ।
केशव धृत-कच्छप रूप जय जगदीश हरे ।।
(कच्छप अवतार)

वसति दशन शिखरे धरणी तव लग्ना ।
शशिनि कलंक कलेव निमग्ना ।
केशव धृत शूकर रूप जय जगदीश हरे ।।
(वराह अवतार)

तव कर-कमल-वरे नखम् अद्भुत श्रृंगम् ।
दलित-हिरण्यकशिपु-तनु-भृंगम् ।
केशव धृत-नरहरि रूप जय जगदीश हरे ।।
(नरसिंह अवतार)

छलयसि विक्रमणे बलिम् अद्भुत-वामन ।
पद-नख-नीर-जनित-जन-पावन ।
केशव धृत-वामन रूप जय जगदीश हरे ।।
(वामन अवतार)
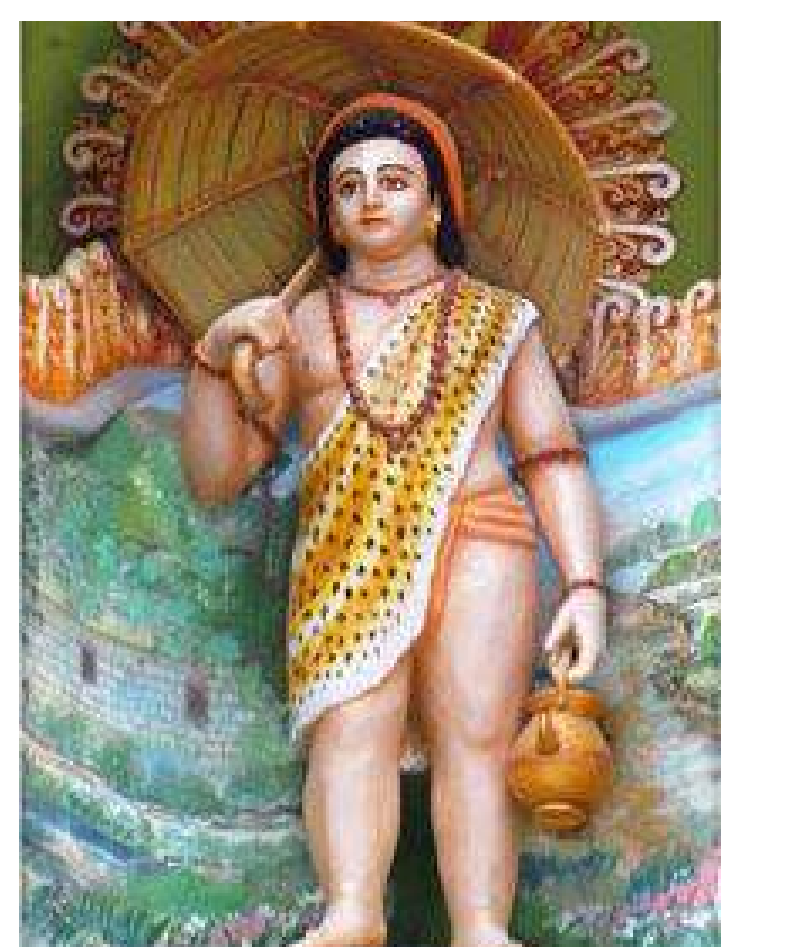
क्षत्रिय-रुधिर- मये जगद-अपगत-पापम् ।
स्नपयसि पयसि शमित-भव-तापम् ।
केशव धृत - भृगुपति रूप जय जगदीश हरे ।।
(परशुराम अवतार)
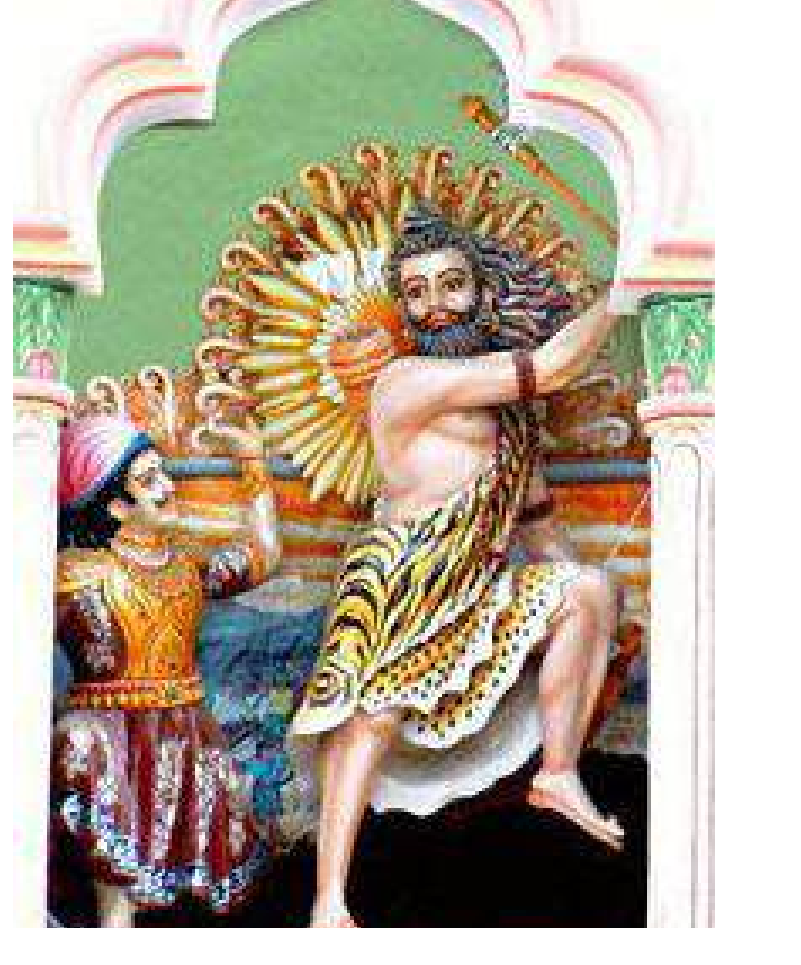
वितरसि दिक्षु रणे दिक्-पति-कमनीयम् ।
दश-मुख-मौलि-बलिम् रमणीयम् ।
केशव धृत- रघुपति- रूप जय जगदीश हरे ।।
(राम अवतार)

वहसि वपुशि विसदे वसनम् जलदाभम् ।
हल-हति-भीति-मिलित-यमुनाभम् ।
केशव धृत-हलधर रूप जय जगदीश हरे ।।
(बलराम अवतार)

निंदसि यज्ञ- विधेर् अहः श्रुति जातम् ।
सदय-हृदय-दर्शित-पशु-घातम् ।
केशव धृत-बुद्ध-शरीर जय जगदीश हरे ।।
(बुद्ध अवतार)
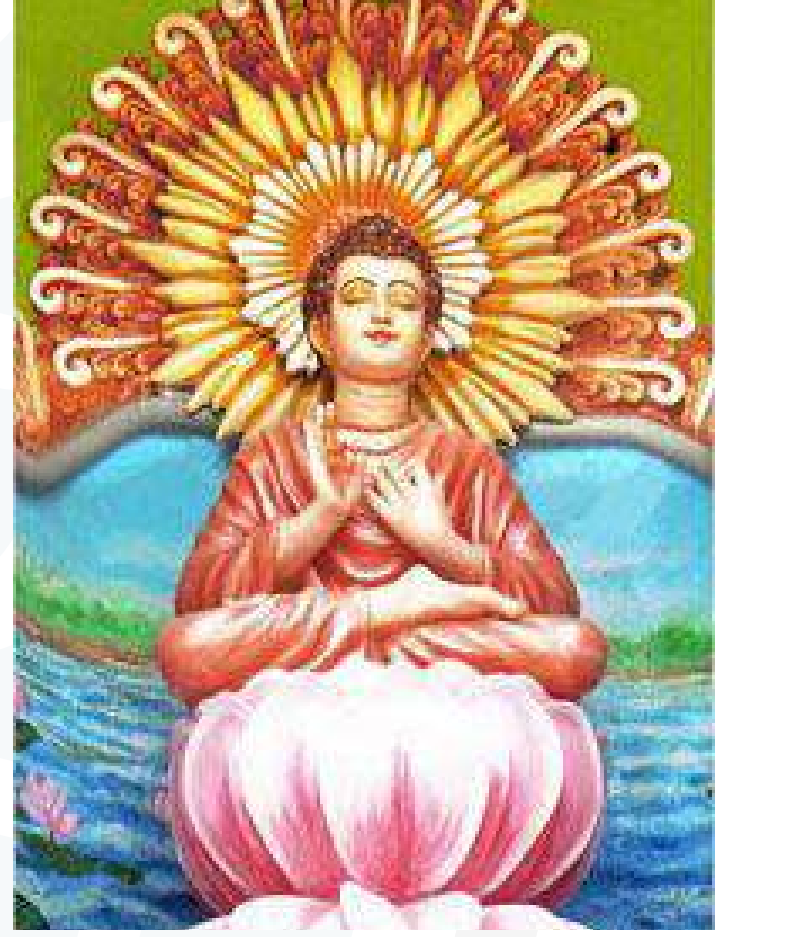
म्लेच्छ-निवह-निधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुम् इव किम् अपि करालम् ।
केशव धृत-कल्कि-शरीर जय जगदीश हरे ।।
(कल्कि अवतार)
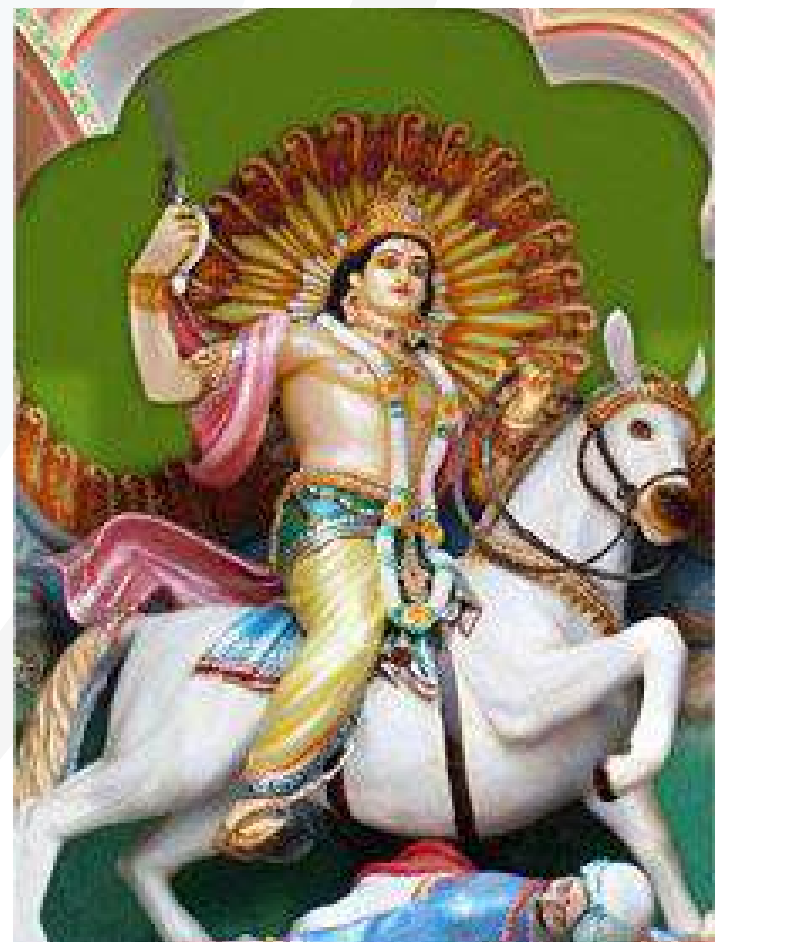
श्री-जयदेव-कवेर् इदम् उदितम् उदारम् ।
श्रृणु सुख-दम् शुभ-दम् भव-सारम् ।
केशव धृत-दश-विध-रूप जय जगदीश हरे ।।
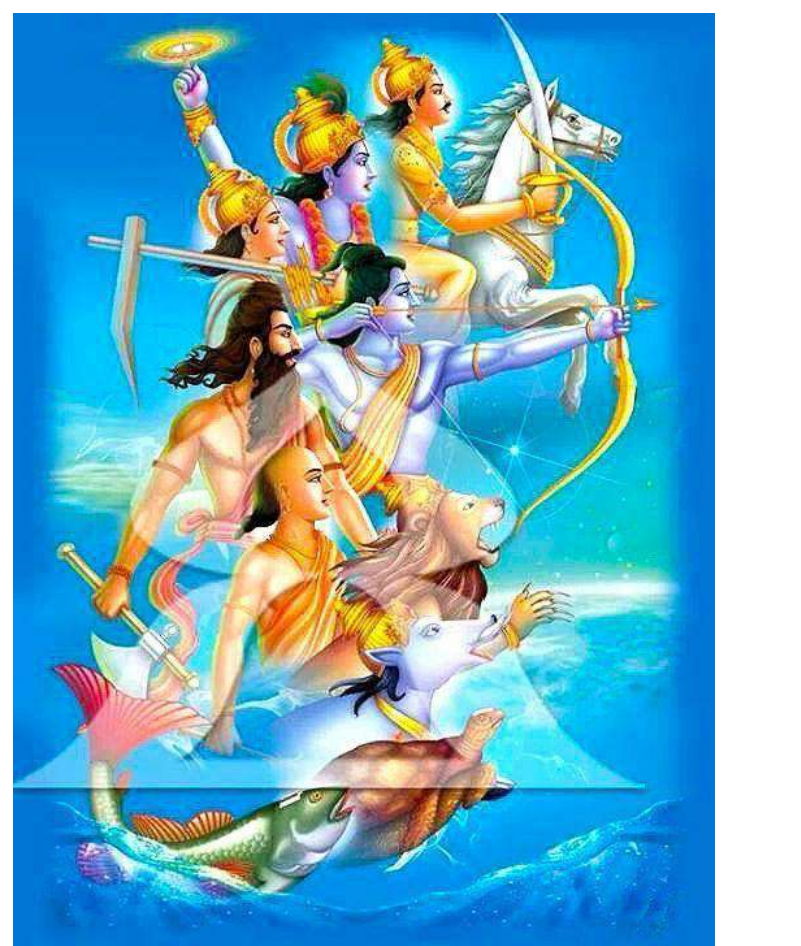
▸ दुर्गा माधव स्तुति

माता योगमाया (राधा रानी) और भगवान महाविष्णु (श्री कृष्ण) हर युग के अंत में धरा अवतरण कर धर्म संस्थापना करते हैं ।

इस समय कलियुग का अंत हो चुका है और शास्त्रों के अनुसार माता योगमाया/दुर्गा देवी जी महालक्ष्मी के रूप में एवं भगवान श्री कृष्ण माधव के रूप में सत्ययुग की प्रतिष्ठा तथा धर्म संस्थापना कार्य करने के लिए अवतार ले चुके हैं ।

इस कारण सभी जनों द्वारा माता दुर्गा देवी और भगवान माधव जी के मंत्र (दुर्गा-माधव स्तुति) का भजन करना जरूरी है।

दुर्गा माधव स्तुति

जय हे दुर्गा माधव कृपामय कृपामयी,
दुर्गान्कु सेबी माधव होइले मो दीअं साई।

बहू रुपे जय दुर्गे, ब्यापी अछु सर्ब ठाबे,
रमा उमा बाणी राधा तो छड़ा अन्य के नाहिं।

मदन मोहन रुपे ब्यापी अछु सर्व ठाबे,
मोहन चित्त मोहिलू श्री सर्व मंगला तुही।

धर्म संस्थापने जन्म यदी ह्वन्ति नारायण,
दुर्गान्कु छाड़ी माधव खेलिबार शक्ति काहिं।

माधबन्क खेल पाई देह धरू महामायी,
माधवन्कु पति पुत्र रुपे खेलाउछु तुही।

माधवन्कु दुर्गा कोले जेहूं देखे बेनी डोले,
ताहार भाग्यर कथा ब्रह्मा शिबे न जोगाई।

जय दुर्गति नाशिनी अभिराम र जननी,
शुभागमन करंतू माधवन्कु कोले नेई।

▸ भगवान माधव (कल्कि राम) के 108 नाम

इस समय कलियुग का 5130वां साल चल रहा है। विभिन्न सनातन शास्त्रों / ग्रंथों और भविष्य मालिका पुराण के अनुसार भगवान माधव, कल्कि रूप में धरा अवतरण करेंगे।

इस कारण सभी सनातनियों द्वारा भगवान "माधव" का नाम भजन करना आज सबसे महत्वपूर्ण तत्व है ।

जिस प्रकार त्रेतायुग में भगवान “राम" के नाम से सभी मनुष्य, ऋषि, मुनि, देवता आदि का उद्धार हुआ था, द्वापरयुग में भगवान “कृष्ण" के नाम से सभी प्राणियों का उद्धार हुआ था, ठीक उसी प्रकार कलियुग के इस संहारकाल (युग संधि काल) में “माधव” नाम ही उद्धार का एक मात्र साधन है ।

त्रिसंध्या का विहित समय

- **प्रातः संध्या** का समय सुबह 3:45 से 6:30 तक ।
- **मध्याह्न संध्या** का समय दोपहर 11:30 से 12:30 तक ।
- **सायं संध्या** का समय सूर्यास्त के 30 मिनट पहले से सूर्यास्त के 30 मिनट बाद तक ।

जो मनुष्य सत्ययुग को जाना चाहते हैं वे ऊपर दिए गए सभी स्तोत्रों / मन्त्रों का सही समय पर पाठ कर देवत्व प्राप्त करते हुए सत्ययुग में प्रवेश पा सकेंगे।

▸ श्री जगन्नाथ सहस्रनाम स्तोत्रम

॥ ॐ श्रीजगन्नाथाय नमो नमः ॥

चतुर्भुजो जगन्नाथः कण्ठशोभितकौस्तुभः । पद्मनाभो वेदगर्भश्चन्द्रसूर्यविलोचनः ॥ १ ॥

जगन्नाथो लोकनाथो नीलाद्रीशः परो हरिः । दीनबन्धुर्दयासिन्धुः कृपालुः जनरक्षकः ॥ २ ॥

कम्बुपाणिः चक्रपाणिः पद्मनाभो नरोत्तमः । जगतां पालको व्यापी सर्वव्यापी सुरेश्वरः ॥ ३ ॥

लोकराजो देवराजः शक्रो भूपश्च भूपतिः । नीलाद्रिपतिनाथश्च अनन्तः पुरुषोत्तमः ॥ ४ ॥

ताक्ष्योध्यायः कल्पतरुः विमलाप्रीतिवर्द्धनः । बलभद्रो वासुदेवो माधवो मधुसूदनः ॥ ५ ॥

दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो वनमाली बलप्रियः । ब्रह्मा विष्णुः वृष्णिवंशो मुरारिः कृष्णकेशवः ॥ ६ ॥

श्रीरामः सच्चिदानन्दो गोविन्दः परमेश्वरः । विष्णुर्जिष्णुर्महाविष्णुः प्रभविष्णुर्महेश्वरः ॥ ७ ॥

लोककर्ता जगन्नाथो महाकर्ता महायशाः । महर्षिः कपिलाचार्या लोकचारी सुरो हरिः ॥ ८ ॥

आत्मा च जीवपालश्च शूरः संसारपालकः । एकोनैको ममप्रियो ब्रह्मवादी महेश्वरः ॥ ९ ॥

द्विभुजश्च चतुर्बाहुः शतबाहुः सहस्रकः । पद्मपत्रविशालाक्षः पद्मगर्भः परो हरिः ॥ १० ॥

पद्महस्तो देवपालो दैत्यारिर्दैत्यनाशनः । चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुराननसेवितः ॥ ११ ॥

पद्महस्तश्चक्रपाणिः शङ्खहस्तो गदाधरः । महावैकुण्ठवासी च लक्ष्मीप्रीतिकरः सदा ॥ १२ ॥

विश्वनाथः प्रीतिदश्च सर्वदेवप्रियंकरः । विश्वव्यापी दारुरूपश्चन्द्रसूर्यविलोचनः ॥ १३ ॥

गुप्तगङ्गोपलब्धिश्च तुलसीप्रीतिवर्द्धनः । जगदीशः श्रीनिवासः श्रीपतिः श्रीगदाग्रजः ॥ १४ ॥

सरस्वतीमूलाधारः श्रीवत्सः श्रीदयानिधिः । प्रजापतिः भृगुपतिर्भार्गवो नीलसुन्दरः ॥ १५ ॥

योगमायागुणारूपो जगद्योनीश्वरो हरिः । आदित्यः प्रलयोद्धारी आदी संसारपालकः ॥ १६ ॥

कृपाविष्टः पद्मपाणिरमूर्तिर्जगदाश्रयः । पद्मनाभो निराकारः निर्लिप्तः पुरुषोत्तमः ॥ १७ ॥

कृपाकरः जगद्व्यापी श्रीकरः शङ्खशोभितः । समुद्रकोटिगम्भीरो देवताप्रीतिदः सदा ॥ १८ ॥

सुरपतिर्भूतपतिर्ब्रह्मचारी पुरन्दरः । आकाशवायुमूर्तिश्च ब्रह्ममूर्तिर्जलेस्थितः ॥ १९ ॥

ब्रह्मा विष्णुर्दृष्टिपालः परमोऽमृतदायकः । परमानन्दसंपूर्णः पुण्यदेवः परायणः ॥ २० ॥

धनी च धनदाता च धनगर्भो महेश्वरः । पाशपाणिः सर्वजीवः सर्वसंसाररक्षकः ॥ २१ ॥

देवकर्ता ब्रह्मकर्ता वषिष्ठो ब्रह्मपालकः । जगत्पतिः सुराचार्यो जगद्व्यापी जितेन्द्रियः ॥ २२ ॥

महामूर्तिर्विश्वमूर्तिर्महाबुद्धिः पराक्रमः । सर्वबीजार्थचारी च द्रष्टा वेदपतिः सदा ॥ २३ ॥

सर्वजीवस्य जीवश्च गोपतिर्मरुतां पतिः । मनोबुद्धिरहंकारकामादिक्रोधनाशनः ॥ २४ ॥

कामदेवः कामपालः कामाङ्गः कामवल्लभः । शत्रुनाशी कृपासिन्धुः कृपालुः परमेश्वरः ॥ २५ ॥

देवत्राता देवमाता भ्राता बन्धुः पिता सखा । बालवृद्धस्तनूरूपो विश्वकर्मा बलोऽबलः ॥ २६ ॥

अनेकमूर्तिः सततं सत्यवादी सांगतिः । लोकब्रह्म बृहद्ब्रह्म स्थूलब्रह्म सुरेश्वरः ॥ २७ ॥

जगद्व्यापी सदाचारी सर्वभूतश्च भूपतिः । दुर्गपालः क्षेत्रनाथो रतीशो रतिनायकः ॥ २८ ॥

बली विश्वबलाचारी बलदो बलि-वामनः । दरह्लासः शरच्चन्द्रः परमः परपालकः ॥ २९ ॥

अकारादिमकारान्तो मध्योकारः स्वरूपधृक् । स्तुतिस्थायी सोमपाश्च स्वाहाकारः स्वधाकरः ॥ ३० ॥

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहश्च वामनः । परशुरामो रामो दशरथात्मजः ॥ ३१ ॥

देवकीनन्दनः श्रेष्ठो नृहरिः नरपालकः । वनमाली देहधारी पद्ममाली विभूषणः ॥ ३२ ॥

मल्लीकामालधारी च जातीयूथिप्रियः सदा । बृहत्पिता महापिता ब्राह्मणो ब्राह्मणप्रियः ॥ ३३ ॥

कल्पराजः खगपतिर्देवेशो देववल्लभः । परमात्मा बलो राज्ञां माङ्गल्यं सर्वमङ्गलः ॥ ३४ ॥

सर्वबलो देहधारी राज्ञां च बलदायकः । नानापक्षिपतङ्गानां पावनः परिपालकः ॥ ३५ ॥

वृन्दावनविहारी च नित्यस्थलविहारकः । क्षेत्रपालो मानवश्च भुवनो भवपालकः ॥ ३६ ॥

सत्त्वं रजस्तमोबुद्धिरहङ्कारपरोऽपि च । आकाशंगः रविः सोमो धरित्रीधरणीधरः ॥ ३७ ॥

निश्चिन्तो योगनिद्रश्च कृपालुः देहधारकः । सहस्रशीर्षा श्रीविष्णुर्नित्यो जिष्णुर्निरालयः ॥ ३८ ॥

कर्ता हर्ता च धाता च सत्यदीक्षादिपालकः । कमलाक्षः स्वयम्भूतः कृष्णवर्णो वनप्रियः ॥ ३९ ॥

कल्पद्रुमः पादपारिः कल्पकारी स्वयं हरिः । देवानां च गुरुः सर्वदेवरूपो नमस्कृतः ॥ ४० ॥

निगमागमचारी च कृष्णगम्यः स्वयंयशः । नारायणो नराणां च लोकानां प्रभुरुत्तमः ॥ ४१ ॥

जीवानां परमात्मा च जगद्वन्द्यः परो यमः । भूतावासौ परोक्षश्च सर्ववासी चराश्रयः ॥ ४२ ॥

भागीरथी मनोबुद्धिर्भवमृत्युः परिस्थितः । संसारप्रणयी प्रीतः संसाररक्षकः सदा ॥ ४३ ॥

नानावर्णधरो देवो नानापुष्पविभूषणः । नन्दध्वजो ब्रह्मरूपो गिरिवासी गणाधिपः ॥ ४४ ॥

मायाधरो वर्णधारी योगीशः श्रीधरो हरिः । महाज्योतिर्महावीर्यो बलवांश्च बलोद्भवः ॥ ४५ ॥

भूतकृत् भवनो देवो ब्रह्मचारी सुराधिपः । सरस्वती सुराचार्यः सुरदेवः सुरेश्वरः ॥ ४६ ॥

अष्टमूर्तिधरो रुद्र इच्छामूर्तिः पराक्रमः । महानागपतिश्चैव पुण्यकर्मा तपश्चरः ॥ ४७ ॥

दिनपो दीनपालश्च दिव्यसिंहो दिवाकरः । अनभोक्ता सभोक्ता च हविर्भोक्ता परोऽपरः ॥ ४८ ॥

मन्त्रदो ज्ञानदाता च सर्वदाता परो हरिः । परर्द्धिः परधर्मा च सर्वधर्मनमस्कृतः ॥ ४९ ॥

क्षमादश्च दयादश्च सत्यदः सत्यपालकः । कंसारिः केशिनाशी च नाशनो दुष्टनाशनः ॥ ५० ॥

पाण्डवप्रीतिदश्चैव परमः परपालकः । जगद्धाता जगत्कर्ता गोपगोवत्सपालकः ॥ ५१ ॥

सनातनो महाब्रह्म फलदः कर्मचारिणाम् । परमः परमानन्दः परर्द्धिः परमेश्वरः ॥ ५२ ॥

शरणः सर्वलोकानां सर्वशास्त्रपरिग्रहः । धर्मकीर्तिर्महाधर्मो धर्मात्मा धर्मबान्धवः ॥ ५३ ॥

मनःकर्ता महाबुद्धिर्महामहिमदायकः । भूर्भुवः स्वो महामूर्तिः भीमो भीमपराक्रमः ॥ ५४ ॥

पथ्यभूतात्मको देवः पथ्यमूर्तिः परात्परः । विश्वाकारो विश्वगर्भः सुरामन्दो सुरेश्वरः ॥ ५५ ॥

भुवनेशः सर्वव्यापी भवेशः भवपालकः । दर्शनीयश्चतुर्वेदः शुभाङ्गो लोकदर्शनः ॥ ५६ ॥

श्यामलः शान्तमूर्तिश्च सुशान्तश्चतुरोत्तमः । सामप्रीतिश्च ऋक् प्रीतिर्यजुषोऽथर्वणप्रियः ॥ ५७ ॥

श्यामचन्द्रश्चतुमूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्गतिः । महाज्योतिर्महामूर्तिर्महाधामा महेश्वरः ॥ ५८ ॥

अगस्तिर्वरदाता च सर्वदेवपितामहः । प्रह्लादस्य प्रीतिकरो ध्रुवाभिमानतारकः ॥ ५९ ॥

मण्डितः सुतनुर्दाता साधुभक्तिप्रदायकः । ॐकारश्च परंब्रह्म ॐ निरालंबनो हरिः ॥ ६० ॥

सद्गतिः परमो हंसो जीवात्मा जननायकः । मनश्चिन्त्यश्चित्तहारी मनोज्ञश्चापधारकः ॥ ६१ ॥

ब्राह्मणो ब्रह्मजातीनामिन्द्रियाणां गतिः प्रभुः । त्रिपादादूर्दद्ध्वसम्भूतो विराट् चैव सुरेश्वरः ॥ ६२ ॥

परात्परः परः पादः पद्मस्थः कमलासनः । नानासन्देहविषयस्तत्त्वज्ञानाभिनिवृतः ॥ ६३ ॥

सर्वज्ञश्च जगद्बन्धुर्मनोजज्ञातकारकः । मुखसंभूतविप्रस्तु वाहसम्भूतराजकः ॥ ६४ ॥

ऊरोवैश्यः पदोभूतः शूद्रो नित्योपनित्यकः । ज्ञानी मानी वर्णदश्च सर्वदः सर्वभूषितः ॥ ६५ ॥

अनादिवर्णसन्देहो नानाकर्मोपरिस्थितः । शुद्धादिधर्मसन्देहो ब्रह्मदेहः स्मिताननः ॥ ६६ ॥

शंबरारिर्वेदपतिः सुकृतः सत्त्ववर्द्धनः । सकलं सर्वभूतानां सर्वदाता जगन्मयः ॥ ६७ ॥

सर्वभूतहितैषी च सर्वप्राणिहिते रतः । सर्वदा देहधारी च बटको बटुगः सदा ॥ ६८ ॥

सर्वकर्मविधाता च ज्ञानदः करुणात्मकः । पुण्यसम्पत्तिदाता च कर्ता हर्ता तथैव च ॥ ६९ ॥

सदा नीलाद्रिवासी च नतास्यश्च पुरन्दरः । नरो नारायणो देवो निर्मलो निरुपद्रवः ॥ ७० ॥

ब्रह्माशम्भुः सुरश्रेष्ठः कम्बुपाणिर्बलोऽर्जुनः । जगद्धाता चिरायुश्च गोविन्दो गोपवल्लभः ॥ ७१ ॥

देवो देवो महाब्रह्म महाराजो महागतिः । अनन्तो भूतनाथश्च अनन्तभूतसम्भवः ॥ ७२ ॥

समुद्रपर्वतानां च गन्धर्वाणां तथाऽऽश्रयः । श्रीकृष्णो देवकीपुत्रो मुरारिर्वेणुहस्तकः ॥ ७३ ॥

जगत्स्थायी जगद्व्यापी सर्वसंसारभूतिदः । रत्नगर्भो रत्नहस्तो रत्नाकरसुतापतिः ॥ ७४ ॥

कन्दर्परक्षाकारी च कामदेवपितामहः । कोटिभास्करसंज्योतिः कोटिचन्द्रसुशीतलः ॥ ७५ ॥

कोटिकन्दर्पलावण्यः काममूर्तिबृहत्तपः । मथुरापुरवासी च द्वारिको द्वारिकापतिः ॥ ७६ ॥

वसन्तऋतुनाथश्च माधवः प्रीतिदः सदा । श्यामबन्धुर्घनश्यामो घनाघनसमद्युतिः ॥ ७७ ॥

अनन्तकल्पवासी च कल्पसाक्षी च कल्पकृत् । सत्यनाथः सत्यचारी सत्यवादी सदास्थितः ॥ ७८ ॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्युगपतिर्भवः । रामकृष्णो युगान्तश्च बलभद्रो बलो बली ॥ ७९

लक्ष्मीनारायणो देवः शालग्रामशिलाप्रभुः । प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ तथैव च ॥ ८० ॥

पञ्चात्मा पञ्चतत्त्वं च शरणागतपालकः । यत्किंचित् दृश्यते लोके तत्सर्वं जगदीश्वरः ॥ ८१ ॥

जगदीशो महद्ब्रह्म जगन्नाथाय ते नमः ।
जगदीशो महद्ब्रह्म जगन्नाथाय ते नमः ।
जगदीशो महद्ब्रह्म जगन्नाथाय ते नमः ॥

इति श्रीजगन्नाथसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ संपूर्णं ॥

▸ श्री जगन्नाथाष्टकं

कदाचित् कालिन्दी तट विपिन सङ्गीत तरलो
मुदाभीरी नारी वदन कमला स्वाद मधुपः
रमा शम्भु ब्रह्मामरपति गणेशार्चित पदो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥१॥

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचर-कटाक्षं विदधते ।
सदा श्रीमद्-वृन्दावन-वसति-लीला-परिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥२॥

महाम्भोधेस्तीरे कनक रुचिरे नील शिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज बलभद्रेण बलिना ।
सुभद्रा मध्यस्थः सकलसुर सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥३॥

कृपा पारावारः सजल जलद श्रेणिरुचिरो
रमा वाणी रामः स्फुरद् अमल पङ्केरुहमुखः ।
सुरेन्द्रैर् आराध्यः श्रुतिगण शिखा गीत चरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥४॥

रथारूढो गच्छन् पथि मिलित भूदेव पटलैः
स्तुति प्रादुर्भावम् प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः ।
दया सिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धु सुतया
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥५॥

परंब्रह्मापीड़ः कुवलय-दलोत्फुल्ल-नयनो
निवासी नीलाद्रौ निहित-चरणोऽनन्त-शिरसि ।
रसानन्दी राधा-सरस-वपुरालिङ्गन-सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयन-पथगामी भवतु मे ॥६॥

न वै याचे राज्यं न च कनक माणिक्य विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल जन काम्यां वरवधूम् ।
सदा काले काले प्रमथ पतिना गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥७॥

हर त्वं संसारं द्रुततरम् असारं सुरपते
हर त्वं पापानां विततिम् अपरां यादवपते ।
अहो दीनेऽनाथे निहित चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयन पथ गामी भवतु मे ॥८॥

जगन्नाथाष्टकं पुन्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः ।
सर्वपाप विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति ॥९॥

॥ इति श्रीमत् शंकराचार्यविरचितं जगन्नाथाष्टकं संपूर्णम् ॥

▸ श्री महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेस्तू महामाये श्रीपिठे सूरपुजिते ।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥१॥

नमस्ते गरूडारूढे कोलासूर भयंकरी ।
सर्व पाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्ट भयंकरी ।
सर्व दुःख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥३॥

सिद्धीबुद्धीप्रदे देवी भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी ।
मंत्रमूर्ते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥ ४ ॥

आद्यंतरहिते देवी आद्यशक्ती महेश्वरी ।
योगजे योगसंभूते महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥ ५ ॥

स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ती महोदरे ।
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥ ६ ॥

पद्मासनस्थिते देवी परब्रम्हस्वरूपिणी ।
परमेशि जगन्मातर्र महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥७॥

श्वेतांबरधरे देवी नानालंकार भूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मार्त महालक्ष्मी नमोस्तूते ॥८॥

महालक्ष्म्यष्टकस्तोत्रं यः पठेत् भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धीमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनं ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्य समन्वितः ॥१०॥

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रूविनाशनं ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ॥११॥

॥ इतिंद्रकृत श्रीमहालक्ष्म्यष्टकस्तवः संपूर्णः ॥